

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 20



॥ वसु ॥

ह्रीं नमः श्री वसु महाशय
नमो यवन्मिसर्वमनुसम
पयः ऊयं नाम समाधि समा
॥ अं वसु महाशय ह्रीं ह्रीं
॥ अं वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ॥ ह्रीं यम

ह्रीं ॥ ॥ वसु ॥

वसु ॥ वसु महाशय सर्वमात्र
पयः नमो वसु महाशय ॥
ह्रीं ह्रीं नमो वसु ॥ ॥
ह्रीं ॥ अं वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ॥

१

ह्रीं ॥ ह्रीं यम नमः ॥ ह्रीं वसु महाशय ह्रीं यम नमः ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं यम ह्रीं यम नमः ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥
कह ॥ वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥
वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥
ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ अं वसु महाशय नमो वसु महाशय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥

॥ वसु ॥

॥२८५॥

किमालामनु॥ॐ नमो भगवते सर्वसायविषयकस्य ४ सर्वकथागकस्य ४ नमस्तु कनस्य ४ य
हूँ हूँ नमस्तु सति कजाकुमहावलकय ४॥ कन २ मट २ भाकन २ कि २ २ न्ना ४ महामनिष्ट बालनः
निनि २ त्वा २ विज्ञानमालय २ दृष्टान् २ क २ दवदरु कन २ किलि २ मा ४ धिषमवज्र हूँ हूँ र
ट ॥ हूँ हूँ हूँ निवलिकला कालपरिकु ४ न २ न्ना ४ नमस्तु वट ४ नमस्तु य हूँ हूँ नमस्तु सति काना
नमस्तु महावलसाधय २ धमा ४ य ॥ यो मा ४ नमस्तु लोका ४ नमस्तु वजी नमस्तु पकिहवल्क ४

२

कालाशान् नमस्तु नमस्तु ॥ ॐ निदिनियमालामनु ॥ ॐ नमो भगवते सर्वसायविषयकस्य ४ सर्व
कथागक नमस्तु साधवल्क महाराषन ४ नमस्तु य हूँ हूँ नमस्तु कन २ हूँ हूँ कन २ हूँ हूँ र ४ स्वाहा ॥ ॐ नि
दिनियमालामनु ॥ ॐ ॥ ॐ निपक्षवलानां सामारधमनु ॥ ॐ नमस्तु वल्क हूँ हूँ र
ट ॥ ॐ रधनावल हूँ हूँ र ॥ ॐ पीतावल हूँ हूँ र ॥ ॐ वृकावल हूँ हूँ र ॥ ॐ धमाव
ल्क हूँ हूँ र ॥ ॐ वज्र आगिदी हूँ हूँ र ॥ ॐ यहापावना हूँ हूँ र ॥ ॐ पित्र २ यहावर्धनीय

॥३७॥

कल २ मक्षवर्धनी विवि २ विविनी वृद्धि वर्धनी स्वाहा ॥ ओं दत्तवकी यद्दं दं रुद्रा ओं माहवकी
नी दं दं रुद्र ॥ ओं पितृवकी नी यद्दं दं रुद्र ॥ ओं यागवकी ती यद्दं दं रुद्र ॥ ओं षष्ठावकी नि य
द्दं दं रुद्र ॥ ॐ नमो भगवते बहु महाप्राप्तये ॥ ॐ ॥ देवास्तमन
षाया गतवाय बहु माय विष्णवे ॥ नमो भगवते सप्तम्य यत्नमकृत सिलषी ॥
ॐ देवलिङ्ग २ मम सर्व विज्ञान हन २ दह २ बहु मायान् निवाचय २ ज्ञास्य २ ज्ञामय २ हिन २

हिन २ नाशय २ नाप २ क्षमय २ हृद २ हृद २ सर्व दह सत्त्वान् ॥ मम विप्र विप्र कानां हस्ति
क २ दं दं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ ॥ नमो नीनी हिन वामजो न स वहसा वृद्ध ॥ नी विवि न
द्यम सलिलं वद चक्र महित व विप्र विप्र हन्ता चला ॥ ॐ ॥ ॐ भगवत वीराना
वृष्टी बहु महाप्राप्तये ॥ मनुष्य क्षिपक लसमाफ ॥ ॐ ॥ ॥ य धर्माद्यादि ॥
शुक्रु यान् सर्व जगमान् शुक्र ॥ ॐ ॥ ॥ शुक्र ॥

॥३५॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 20